बदली है नारी पर क्या बदला है पुरूषवादी समाज का नजरिया

डॉ॰ अर्चना कुमारी

स्त्री–पुरूष जवीन–रथ के दो चक्र हैं और सभी क्षेत्रों में दोनों का समान महत्व है। प्राचीन भारतीयों ने इस तथ्य को भली–भांति हृदयंगम किया था और इसलिए समाज में नारी को एक बहुत ही सम्मानीय पद मिला था। जीवन के सभी कार्यो में वे भाग लेती थीं। उन्हें काव्य, कला, दर्शन एवं धर्म सबकी शिक्षा दी जाती थी और बहुत सी विदुषियों ने सुन्दर कविताओं का निर्माण किया था तथा कला एवं दर्शन की उन्नति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। भारतीय नारी के जीवन के इतिहास में वह दिन बड़ा ही अशुभ था जबकि विदेशी आक्रान्ताओं ने इस पवित्र भूमि में प्रवेश किया। मुस्लिम शासन–काल में नारी की संपूर्ण स्वतंत्रता का अपहरण हो गया और अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए कोई संस्था नहीं रह गई और जो कुछ भी शिक्षा मिल सकती थी वह माता–पिता के द्वारा ही। घर में धर्म एवं चरित्र संबंधी शिक्षा तो प्राचीन पूज्य–पुरूषों की कथाओं के द्वारा दी जाती रही किन्तु साहित्य, कला आदि अन्य विषयों की बिल्कुल ही उपेक्षा हो गई। मुस्लिम शासन–काल में हमारी सारी सामाजिक –व्यवस्था विश्रृंखल हो गई एवं चारों ओर मूर्खता, नैराश्य, कायरता, अविश्वास आदि ने डेरा जमा लिया।